भाकृअनुप-केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान

कपास की खेती के लए 13 से 19 जुलाई, 2015 साप्ताहिक सलाह

(35 मानक सप्ताह)

"सलाहकार संबं धत राज्यों के राज्य कृ ष वश्व- वद्यालयों से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर कया जाता है"

साप्ताहिक मौसम की रिपोर्ट :

राज्य / जिले								साप्ताहिक सलाह
	13	14	15	16	17	18	19	
पंजाब								इस सप्ताह मौसम बदली और आर्द्र रहेगा कई स्थानों में आंधी के साथ की बारिश भ वष्यवाणी की गई है। कसान वर्षा के दौरान संचाई न करें। कपास के प्रारं भक वकास चरण में खेतों से अतिरिक्त पानी बाहर निकालें। कपास में सफेद मक्खी (Whitefly) का प्रकोप आ र्थक सीमा (6 / पत्ती) से ऊपर बढ़ गया है। बादल मौसम और उच्च तापमान की वजह से खेतों में बैक्टीरियल ब्लाइट पत्ता तुषार दिखाई दिया है कोणीय पत्ता स्पॉट पत्तों के नसों के पास भूरे रंग के होते है देखा जा सकता है। इसके नियंत्रण के उपाय बारिश के बाद सर्फ सफारिश पर शुरू कया जा सकता है। जुलाई के अंतिम सप्ताह में भारी वर्षा के बाद पैरा वल्ट (parawilt) होने की संभावना है। प्रारं भक दौर में लक्षण का पता लगाने पर नियंत्रण के उपायों तत्काल करने से पैरा वल्ट (parawilt) प्रकोप को नियंत्रित कर सकते हैं हरियाणा के कुछ स्थानों में CLCuD दिखाई दिया है और साथ ही रूट सड़ांध की समस्या को सबसे पहले संचाई के बाद देखा गया था। बादल के मौसम के कारण कपास की क लयाँ को झड़ते देखा गया है। जहां कहीं भी स्फीद मक्खी (Whitefly) ईटीएल स्तर (6-8 प्रौढ़ / 3 पत्ती) को पार कर गया है वहाँ कसानों को 1.0 लीटर / एकड़ @ नीम का तेल स्प्रे करने के लए और रूट सड़ांध प्रभा वत क्षेत्रों के लए जड़ की आस पास कार्बेण्डाजिम@1 ग्राम / लीटर स्प्रे की सलाह दी जाती है। निय मत रूप से लीफहुपर (leafhopper) निगरानी करें बादल का ये मौसम इसके संक्रामण के लए अनुकूल है। जहां कहीं कपास के फसल मे क लयों पुष्पित हो रही है वहाँ नाइट्रोजन: फास्फोरस: पोटाश (13: 0:45) छिड़काव की सलाह दी जाती है। निय मत रूप से कीटों और रोगों के लए फसल की निगरानी करने की सलाह दी जाती है।
हरियाणा								
सरसा	0	0	0	0	0	0	7	
हिसार	9	0	0	0	0	0	10	
फ़तेहाबाद	0	0	0	0	0	0	12	
राजस्थान								सप्ताह के अंत में बादल छाए रहेंगे और हल्की बारिश होगी। कसानों को म ी की नमी को संर क्षत करने के लए निदाई गुड़ाई (इंटर् कल्चर) कार्यों करने की सलाह दी जाती है। क्षेत्र वशेष में लीफ हुपर का प्रकोप एवं प्रारं भक लक्षणों के आधार पर रूट सड़ांध और पैरा वल्ट (parawilt) के लए क्षेत्र व शष्ट अनुसं शत उपचार उपाय शुरू कया जा सकता है। पैरेथराइ (pyrethroids) या फप्रोनिल (Fipronil) की छिदकाव बिलकुल न करें, इन कीटनाशकों सफेद मक्खी (whitefly) का संक्रामण बढ़ जाएगा । नीम के तेल आधारित स्प्रे को प्राथ मकता दें।
हनुमानगढ़	0	0	1	2	1	2	10	
श्रीगंगानगर	0	0	1	2	1	2	3	
बांसवाड़ा	0	0	1	2	1	0	3	
उड़ीसा								कपास की बुआई जल्द से जल्द पूरा कर लें। लाल चना या कसी भी फली फसल को राईज़ोबियम उपचार के बाद कपास के साथ (Inter-cropping) लगाया जाना चाहिए। अरंडी, गेंदा और मक्का जैसे ट्रैप फसलों को कपास की सीमा पर पंक्तियों में लगाया जाना चाहिए। खरपतवार नियंत्रण के लए पहले ही खरपतवार नासक का छिडकाव करना चाहिए। जे सड के संक्रामण को कम करने के लए, नीम आधारित कीटनाशकों का छिड़काव 2.5 मलीग्राम / लीटर पानी मे मला कर कया जाना चाहिए।
कोरापुट	7	50	39	29	26	23	21	
कालाहांडी	24	41	32	29	23	20	12	
बोलांगीर	11	10	10	10	13	9	8	
गुजरात								वडोदरा को छोड़कर अगले 6-7 दिनों के लए वर्षा के कमजोर के पूर्वानुमान कर रहे हैं। बारिश तीसरे सप्ताह के दौरान कुछ जिलों में होने की उम्मीद कर रहे हैं, ले कन जुलाई के आ खरी हफ्ते में और अगस्त की शुरुआत में राज्य भर में
अमरेली	0	0	0	0	0	0	0	
भावनगर	0	0	0	0	0	0	0	

जामनगर	0	0	0	0	0	0	0	मौसम सूखा रहने की भ वष्यवाणी की गई हैं। वर्षा सं चत क्षेत्रों में कपास की बुआई अब ना करें। जहाँ सचाई उपलब्ध हैं वहाँ युवा पौध को सं चत करें। चूसक कीट की हल्की घटना देखी गई है। युवा पौध के मुरझाने का प्रबंधन साप्ताहिक सलाह दिये सलाह के अनुसार करें। फसल को बचाने के लए संचाई करें। सफेद मक्खी (Whitefly) के संक्रमण होने की संभावना है। इसे से बचने के लए बहुत महत्वपूर्ण है जो कीटनाशक स्प्रे से समस्या बढ़ती है। उसका उपयोग ना करें। केवल नीम तेल आधारित स्प्रे सफ़ेद मक्खी प्रबंधन के लए उत्तम है वशेष कर प्रारम्भिक अवस्था में। पैरेथराइ (pyrethroids) या फप्रोनिल (Fipronil) की छिड़काव बिलकुल न करें,
राजकोट	0	0	0	0	0	0	0	
भरूच	0	0	0	0	0	0	0	
सबरकांठा	0	0	0	0	0	0	0	
सुरेन्द्रनगर	0	0	0	0	0	0	0	
अहमदाबाद	0	0	0	0	0	0	0	
वडोदरा	0	0	0	0	4	7	12	
पाटन	0	0	0	0	0	0	0	
मेहसाना	0	0	0	0	0	0	0	
मध्य प्रदेश								इस सप्ताह अल्प वर्षा की भ वष्यवाणी कर रहे हैं। वर्षा आधारित खेतों में अब बुआई ना करें। वर्षा सं चत क्षेत्रों में जुलाई के 2-3 सप्ताह में बोई फसल जुलाई-अगस्त में कमजोर मानसून की होने के कारण भ वष्यवाणी नमी तनाव संभावना है अतः नमी संरक्षण के उपायों की जोरदार सफारिश की जाती है।
खरगोन	0	0	0	0	0	0	0	
धार	0	0	0	0	0	0	3	
खंडवा	0	0	0	0	0	0	0	
महाराष्ट्र								मानसून के पूर्वानुमान के अनुसार आगे एक शुष्क अव ध है, इस लए नमी संरक्षण के उपायों की जोरदार सफारिश की जाती है। फसल की संचाई क्षेत्रों में शाकीय से क लयाँ निकलने की स्थिति में तथा वर्षा आधारित क्षेत्रों में शाकीय (वनस्पति) चरण में है। तुरंत इंटर कल्चर (**Interculture**) और निराई की सफारिश की जाती है टाप ड्रे संग सुझाए गए उर्वरकों डालना चाहिए। अब कसी भी कीटनाशक स्प्रे न करें।
नागपुर	0	0	0	0	0	0	5	
वर्धा	0	0	0	0	0	0	6	
चंद्रपुर	0	0	0	0	0	0	10	
यवतमाल	0	0	0	0	0	0	5	
अमरावती	0	0	0	0	0	0	7	
अकोला	0	0	0	0	0	0	4	
बुलढाणा	0	0	0	0	0	0	4	अगले सप्ताह मानसून पूर्वानुमान के अनुसार कमजोर हैं। जुलाई के तीसरे सप्ताह में कुछ की बारिश के बाद, अंतिम सप्ताह शुष्क होने की भ वष्यवाणी की है। इंटर कल्चर (**inter-culture**) कार्य तुरंत पूरा करें और सप्ताह के अंत तक बारिश होने की संभावना है, बारिश के बाद खेतों में उर्वरक डालें। यदि म ी में पर्याप्त नमी नहीं है, तो खेतों में खाद नहीं डालना चाहिए। कपास के खेतों में में खरपतवार नियंत्रण के लए होइग (**Hoeing**) एवं निराई कया जाना चाहिए। फसल को सुर क्षत करने के लए जहां संभव है वहाँ **3 cm** गहराई तक संचाई कया जाना चाहिए। प्री मानसून कपास में पौधे के कुछ पैच लाल और कमजोर हो गए है तथा प्रारं भक चरणों में पौधों में पैरा वल्ट के तनाव से उबरने के लए साप्ताहिक सलाह में अनुशं सत प्रबंधन के तरीके अपनाने कर इनका नियंत्रण कया जा सकता है। वर्षा आधारित फसल में नमी तनाव हो सकता है अतः नमी संरक्षण प्रबंधन कया जाना चाहिए।
परभनी	0	0	0	0	0	0	6	
नांदेड़	0	0	0	0	0	0	5	
बीड़	0	0	0	0	0	0	6	
वा सम	0	0	0	0	0	0	7	
धुले	0	0	0	0	0	0	9	
जलगांव	0	0	0	0	0	0	9	
जालना	0	0	0	0	0	0	9	
औरंगाबाद	0	0	0	0	0	0	11	
तेलंगाना								सप्ताह के अंत में कम बारिश की भ वष्यवाणी की गयी है। सं चत क्षेत्रों में बुवाई कर देना चाहिए। जहां भी बुवाई कया गया है कसानों को इंटर कल्चर और नमी संरक्षण करने की सलाह दी जाती है। वर्षा आधारित क्षेत्रों में इस सप्ताह के बाद बोये गए फसल अंकुरण और नमी तनाव की अ धक संभावना है। थ्रप्स और सफेद मक्खी का प्रकोप हो सकता है,कोई भी रासायनिक स्प्रे ना करें। जल्दी बुआई की फसल में लीफ हॉपर और व्हाइट फ्लाई देखा जाता है वहाँ नीम का तेल आधारित स्प्रे करें। कीट और रोगों के आरं भक संक्रामण से बचने के प्रस्ता वत कपास क्षेत्रों के मेढ़ों को स्वच्छ और खरपतवार मुक्त रखें । ग र्मयों में बोये कपास में पीलापन, पत्तियों का लाल होना और तेज हवा के साथ उच्च तापमान के कारण वकास अवरुद्ध को कम करने के लए 1-2% **KNO**3 + 1% **MgSO**4 का छिड़काव सप्ताह में दो बार करें।
आदिलाबाद	0	0	8	6	4	3	6	
वारंगल	0	0	8	5	6	4	6	
खम्मन	0	0	9	4	5	6	8	
करीमनगर	0	0	4	5	3	2	6	
नालगोंडा	0	0	4	3	4	2	6	
आंध्रप्रदेश								
गुन्टूर	0	0	8	6	10	4	8	
प्रकासम	0	0	6	8	5	4	6	
कर्नाटक								देसी कपास की कस्मे (जयाधर ,डीडीएचसी-11और आरएएचएस-14) की बुवाई जुलाई के अंत तक बुवाई की जा सकती है। आवश्यक खाद की खुराक नहीं डाली गयी है , देसी कपास जून के पहले पखवाड़े के दौरान बोयी गयी है तो नाइट्रोजन फास्फोरस उर्वरक 40:25:25 के अनुपात में कलो/हेक्टेयर की दर से डालने की सफारिश की है।
धारवाड़	6	15	4	4	4	5	3	
हवेरी	10	12	2	3	3	4	4	
मैसूर	4	8	2	2	3	8	7	

त मलनाडू								
पेरमबेलूर	0	7	0	3	4	5	6	सप्ताहांत के दौरान आं शक रूप से बादल और अच्छी वर्षा की संभावना है।खेत तैयार करने कार्य चल रहा है। वर्षा साथ बुवाई शुरू करने की तैयारी है।
सलेम	0	6	0	13	8	13	14	
त्रिची	0	12	3	16	0	46	32	
वरडुनगर	0	15	17	24	27	53	41	

आदर्श वर्षा					
वर्षा म.मी.	<5	5-20	20-50	50-80	>80

सीआईसीआर द्वारा प्रबंधन रणनीति की सफारिशें:

(के.आर. क्रांति द्वारा ल खत: इस सलाह का कोई हिस्सा कसी भी प्रकाशन इलेक्ट्रॉनिक या प्रंट या कस अन्य साधन में कसी भी रूप में लेखक के अनुमति के बिना इस्तेमाल कया जा सकता है।)

इस सं क्षप्त नोटमेंप्रबंधन रणनीति की सफारिशें सीआईसीआर कए गए प्रयोगों के परिणामों के आधार पर और व भन्न राष्ट्रीय और वैश्विक एजें सयों द्वारा वक सतपारिस्थिति के अनुरूप वक सत दिशा-निर्देशों के आधार पर कया जा रहा है।

समान्य फसल स्वास्थ्य प्रबंधन:

1. जल्दी परिपक्वहोने वाले या संकर-बीटी-कपास कस्मों को वर्षा सं चत क्षेत्रों में प्राथ मकता दिया जा सकताहै।
2. पहली बारिश(80 ममी) वर्षा के तुरंत के बाद वर्षा सं चत क्षेत्रों में जल्दी बुवाई को प्राथ मकता दिया जाना चाहिए।
3. वर्षा सं चत क्षेत्रों में वशेष रूप से उच्च घनत्व रोपण व ध में लकीरें (रिजेज़) पर बुआईसबसेज्यादा कया जाता है।
4. वर्षा सं चत क्षेत्रों में जहां सचाई सु वधा हो वहाँ संकर-बीटी-कपास 90X30 सेमी दूरी पर अ धक चौड़ाई (व्यापक रिक्ति) में बोया जा सकता है।
5. गैर बीटी कस्मों सूरज जैसे (सीआईसीआर) एनएच 615, (वी.एन.-भी, परभणी), एकेएच 081 (डॉ पीडीकेवीअकोला), फुले धन्वन्तरी (एमपीकेवी राहुरी) और अंज ल (एलआरके516) जल्दी परिपक्वहोने वाली कस्में हैं यदि इन कस्मों को उच्च घनत्व में 15 जून से पहले 60**x**10 (फुलेधन्वन्तरी के लए 40x10cm) सेमी दूरी पर रोपण कया जाता हैतो सूखा तनाव और बोलवर्मके प्रकोप से फसल बच जाएगा।
6. गैर बीटी कपास की कस्मों की दो पंक्तियो के बीच एक पंक्ति में ब्रेडायरिजोबियम जेपेनिकम से उपचारित लोबिया या सोयाबीन के बीज को 45 सेमी दूरी पर वैकल्पिक (आल्टर्नेट) पंक्तियों में 10 सेमी पौधे से पौधे दूरी पर लगाया जासकता है।
7. अंतर फसल (इंटर क्रो पंग) में सोयाबीन या लोबिया के बीज कोब्रेडायरिजोबियम जेपेनिकमसे उपचरित कर संकर बीटी के साथ लगाया जा सकता है।
8. कपास के खेतों की सीमा पंक्तियों में अरहर की (2-3 पंक्तियाँ) लगाने से मली बग (आटे के कीड़े) का प्रकोप को रोकने के लए सहायक होगा और ये रिफ़्यूजिया **(refugia)** के रूप में सेवा करते हैं।
9. पहली बारिश के बाद फार्म खाद या कम्पोस्ट 5 से 10 टन / हेक्टेयर की दर से खेतो में डाला जाना चाहिए।
10. एजोबेक्टर और पीएसबी 25 ग्राम प्रति कलोग्राम बीज की दर से पोषक तत्वों नियतन (फ़क्सेशन) के लए इस्तेमाल कया जाना चाहिए।
11. क्राइ 1 एसी (Cry1Ac) की उ चतअ भव्यक्ति सुनिश्चित करने के लए और पत्ता लाल रोग की समस्या को कम करने के लए 1% कोबाल्ट क्लोराइड का छिड़काव करें। स्थूल और सूक्ष्म पोषक के लए अनुकूल पोषक तत्व प्रबंधनक्राइ 1 एसी (Cry1Ac) की उ चतअ भव्यक्ति सुनिश्चित करने और पत्ता लाल रोग की समस्याओं को कम करने के लए $MgSO_4$2% यूरिया के साथ 2% डीएपी का छिड़काव करें। वल्ट के प्रारं भक चरण में पौधों की रिकवरी के लए 1% कोबाल्ट क्लोराइडका छिड़काव तथा 1% बाबेस्टीन से तने के आस पास की म ी को गीला (तर) करें यह फसल की तंदरुस्ती के लए मददगार पाया गया है।

12. पत्ता लाल रोग का निवारण:90 दिन के फसल मे 2% यूरिया,0.5% जिंक सल्फेट और 0.2% बोरान दो बार में 15 दिनों के अंतरालमें छिड़काव से लाल पत्ता रोग से बचाव होगा।
13. क लयों (स्क्वेयर) और फूलों का झड़ना रोकने के लए फनोलेक्स 4.5 एसएल ((एनएए) हार्मोन, 21 पीपीएम 7 लीटर प्रति 15 लीटर पानी के दर से मला कर स्प्रेकरें।

कीटोंएवं रस चूसक कीटों काप्रबंधन:

सामान्य सफारिशें

ये करें:

1. कीट एवं रस चूसक कीट प्रतिरोधी कस्मों/संकरोंका चयन करें। बीटी संकर कस्में कीट एवं रस चूसक कीटप्रतिरोधी होते हैं इनमें कीटनाशकों के छिड़काव की आवश्यकता बहुत कम होती है।
2. कपास के फसल के साथ लोबिया या चारा (सोरगम) या सोयाबीन अथवा काले चने के साथ अंतर-फसल (इंटर-क्राप) लगाने से चूसक कीटों के भक्षक/शकारी कीटों (प्रडेटर) की वृ द्ध के प्रोत्साहन के लएलगाना चाहिए।
3. इमेडाक्लो फ्रड 8 ग्राम, वटावेक्स या थरम 3 ग्राम प्रति कलोग्राम बीज में उपयोग से चूसक कीट (स कंग पेस्ट) और रोगों के खलाफ फसल की रक्षा करेगा।
4. चूसक कीट के लए वशेष रूप से अतिसंवेदनशील कस्मों में नाइट्रोजन उर्वरकों का उपयोग करने से इससे होने वाले नुकसान को बहुत कम करता है।
5. खेत की स्वच्छता (घाँस मुक्त) बनाए रखें।
6. मली बग संक्र मत पौधों को बाहर निकालें और कपास के खेत से दूर नस्ट करें।
7. कम वघटनकारी कीट प्रबंधन के लए नीम से तैयारकीटनाशक और जै वक नियंत्रण वकल्पका उपयोग करें।
8. गुलाबी सूँडी (पंक बोलवर्म) की निगरानी के लए फेरोमोन ट्रेपका उपयोग कुशल एवं प्रभावकारी साधन है।
9. मरीड बग, मली बग और अन्य चूसक कीटों (स कंग पेस्ट) के प्रभावी एवं पर्यावरण के अनुकूल नियंत्रण के लए पौधों के तनों में और जड़ों के आस पास इमेड़ाक्लो फ्रड डाइमेथोयेट या ए सफेट 30-40 डीएएस और 50-60 डीएएस का उपयोग प्रभावी नियंत्रण के लए करें।

ये ना करें:

10. कपासमेंपर्ण कुंचन वायरस के प्रकोप को रोकने के लए उत्तर भारतीय क्षेत्रों में देर से (15 मई के बाद) कपास की बुआई करने से बचें।
11. कीटों के प्राकृतिक एवं स्वाभा वक जै वक नियंत्रण के लए जहां तक संभव हो सके फसल के पहले दो माह तक रासायनिक कीटनाशक के उपयोग नाकरें।
12. कपास के पत्ता मरोड़क (लीफ फोल्डर) के नाबा लक और नगण्य लेप्टोटेरीन कीटों जैसे की साइलेप्टा डेरोगेटा एमोनिस फ्लेवा और से मलूपर के लए कीटनाशक का छिडकाव न करें। इनके लार्वा से कपास की नगण्य नुकसान होता है। ये पैरा सतएड की लए मेजबान के रूप में सेवा देता है। जैसे ट्राइकोडर्मा, एपेंटेल्स और साइसीरोपा फार्मोसा प्रजाति जो हेलोकोवर्पा आर्जिमेरा और अन्य बालवर्म पर हमला कर उनको नष्ट करता है।
13. चयन के दबाव से बचने के लए बीटी कपास पर बीटी-योगों का स्प्रे न करें।
14. पत्तों से संबन्धित नियोनिकोटिनाइडकीटनाशकों का उपयोग करने से बचेंजैसे क एसेटामी प्रड), ई मडाक्लो प्रड क्लो थए डन औरथाईमेथोजेम,चूं क संकर कपास के बीज इमेडाक्लों प्रड से उपचरित होते हैं इस लए कीटों मेंइनके और उपयोग से इनके प्रति प्रतिरोध क्षमता बढ़ जाने की संभावना होती है।
15. डब्ल्यूएचओ ग्रेड -1 कीटनाशकों का उपयोग न करें। अत्यंत खतरनाक श्रेणीके कीटनाशकों जैसे कफास्फे मडोन मथाइलपैरा थओन,फोरेट,मोनोक्रोटोफॉसडाईक्लोर्वोसकार्बोफुरानट्राईज़ोफासऔरमेटासाइस्टोस।
16. फप्रोनिलऔर पाइरेथ्रोड़सफेद मक्खी (व्हाइटफ्लाई)के प्रकोप रोकने के लए न करें।
17. कीटनाशक मश्रण का उपयोग बिलकुल ना करें कीटनाशक मश्रण से पारिस्थितिकी प्रणा लयों (इको- सस्टम) बा धत होती है जो गंभीर रूप कीट प्रकोप आमंत्रित करती हैं।ये कीटनाशक ल क्षत नाशीकीटों के लए चयनित अति वषैले है जब क कपास पारिस्थिकीतंत्र में लाभदायक कीटों के लए कम वषैले हैं। ये कीटनाशक पर्यावरण हितैषी कीटनाशक प्रतिरो धता प्रबंधन कार्यक्रम के लए उपयुक्त है।

गुलाबी सूँडी और चतिदार सूँडी : इनके लए आ थक हानि सीमा है – 10 हरे गुलरों में एक जी वत सूँडी मलने पर या लगातार तीन रातों में 8 पतंग (कट) प्रति ट्रेप प्रति रात पकड़ में आने पर; क्विनोलाफास 25 ईसी या का 2 मली प्रति लीटर पानी की दर से या थायो डकार्ब 75 डब्लू पी का या कोई पाइरेथ्रोइड का फसल पर छिड़काव करें।

अन्य कीटों का नियंत्रण:

1) स्पोडोप्टेरा लटुरा: इसइल्लेकेअण्ड पुंजों कोहाथ से इकत्र करें अथवा एसएनपीवी (स्पोडोप्टेरा लटुरा न्यूक्लियर पॉलीहेड्रो सस वायरस) का 500 एलई/हे. की दर से या नोवाल्यूरोन 10 ईसी का 200 मली या थायो डकार्ब (ला र्वन) 75 डब्लू पी 250 ग्राम पाउडर 250 लीटर पानी में मला कर प्रति एकड़ छिदकव करें।
2) प्ररोह घून के नुकसान को कम करने के लए प्रोफेनोफास 2 मली प्रति लीटर पानी की दर से फसल पर छिदकव करें।
3) भारी वर्षा वाले क्षेत्रों में घोंगें का प्रकोप: अ धक वर्षा वाले क्षेत्रों में घोंघे का प्रकोप: प्रलोभक मेटेल्डीहाइड 2% (स्नेल कल) 12.5 क. ग्रा. /हे. की दर से घोंघों के छिपने की जगह पर प्रयोग करें । मेढों, फसल के चारों ओर उन जगहों पर डालें जहां इनका नुकसान दिखायीदे।

रोग प्रबंधन:

नवीन मुरझान (पैरा वल्ट) मुरझान/जड़ गलन:

कुछ खेतों में सूखा के बाद वर्षा होने या सचाई करने परइसके लक्षण फसल में दिखायी देते हैं। प्रभा वत पौधों पर मुरझान के लक्षण दिखायी देने के कुछ घंटों में ही कोबाल्ट क्लोराइड 10 म. ग्रा. प्रति लीटर पानी की दर (पीपीएम) से छिड़काव करे या प्रभा वत पौधों की जड़ों में कापर-आक्सी-क्लोराइड 25 ग्रा. तथा यूरिया 200 ग्राम या कार्बेडेजिम 1 ग्रा./लीटर की दर से 10 लीटर पानी लेकर म ी को तर करें।

गूलर सड़न: साधारणतः प्रारम्भिक वक सत पौधे के निचले हिस्से के गूलर बादलों के मौसम या लगातार रिम झम बारिसहोते रहने की स्थिति में गूलर सड़ जाता है। मैकोजेब 75 डब्लूपी + क्लोरो थेलोनिल 70 डब्लूपी प्रत्येक 2 ग्राम पाउडर प्रति लीटर पानी की दर से ले कर फसल पर छिड़काव करें। अच्छा पराभव लाने के लए सल्वेट 99 के 10 ग्राम या 10 ग्राम ट्राइट्न 50 मली 100 लीटर पानी की दर से मलाए।

एल्टरनेरिया अंगमारी: मेंकोजेब 25 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से फसल पर आवश्यकतानुसार छिड़काव करें।

माइरोथे सयम पत्ती धब्बा रोग और जीवाणु झुलसा: स्टेप्टोसाइक्लीन सल्फेट (15-20 ग्रा./हे.)+कापरआक्सीक्लोराइड (2000 ग्रा./हे.) 200-250 लीटर पानी की दर से फसल पर छिड़काव करें।

खरपतवार प्रबंधन: छोटे खरपटवारों पर खरपतवारनाशक अ धक प्रभावी होते हैं।

घांसें: क्वीजेलोपोफ- इथाइल या फेनोक्साप्रोप-इथाइल या फ्लूएजीफ़ोप-ब्यूटाइल का छिड़काव।

नरकर और घासें: प्रोपेक्विजाफोप-इथाइल का छिड़काव करें।

चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार: पाइरो थयोबेक सो डयम का छिड़काव करें।

खरपतवारों उगने पर खरपतवार नाशकों से उनका समयबद्ध एवं प्रभावी नियंत्रण होता है। जब खेत की म ी गीली हो तो हाथ से निराई में मुश्किल हो जाती है ऐसे नेंशाकनाशी वशेष रूप से प्रभावी और समय पर नियंत्रण प्रदान करता है। खरपतवारनाशी (हर्बीसाइड) नवजात खरपतवारों (10-15 दिनों आयु से कम) पर अ धक प्रभावी एवं कारगर होते हैं। घाँसकुल के खरपतवारों के नियंत्रण के लए क्लोजईलोफोपइथाइल, फेनोक्सप्रोप सो डयम, फ्लुयाजीफोप ब्यूटाइल,का प्रयोग कर सकतें हैं। नरकर और घासों के लए पायरिथोबक ईथाइल हैं और चौड़ी पत्तीवाले खरपतवारों के लए पायरीओ थबेक सो डयम कारगर है। अ धक जानकारी के कए कृ ष वश्व वधालयों ए तकनीकी वशेषज्ञों से वचार वमर्श कर सकते हैं।

जल जमाव प्रबंधन: कपास अतिरिक्त पानी के लए बहुत संवेदनशील है। मध्य और द क्षण भारत के कई हिस्सों में अ धक बारिश कारण के पानी का जमाव होने सेसमस्याग्रस्त कया जा सकता है।गहरी काली म ी पर उगाए गए कपास जहां पानी निकासी व्यवस्था कमजोर है वहाँ जल जमाव की वजह से कपास की फसक प्रभा वत है।भारी वर्षा की स्थिति में खेतों सेपानी निकासी के लए भू म के ढलान के साथ पर्याप्त मात्रा में जल निकासी चैनलों याअतिरिक्ततरीके से पानी निकासी की व्यवस्था करें।उन क्षेत्रों में जहां वर्षाअ धमानतः 700-900 mmी हो वहां म ी में बेहतर की नमी संरक्षणके लएभू म को पुनः निर्माण कर लकीरें (रिजेज़) रिज हल की मदद से बनाए। यह तकनीकी और कपास की लकीर (रिजेज़) में बुवाई से वर्षा जल का संरक्षण होगा और ये रिजेज़ और फ़रोज भारी वर्षा वाले क्षेत्रों में अतिरिक्तजल के लए जल निकासी चैनलों की तरह कार्य करतें है।

ड्रेनेज चैनलखेतों की सीमाओं में साथ खोला जाना चाहिए, जिससे अतिरिक्त जल आसानी से खेतों से निकाला जा सके। यदि बुवाई अभी तक पूरा नहीं कया गया तो रिजेज़ और फ़रोजके शीर्ष में तुरंत बुवाई शुरू करने के लए सफारिश की है।यह मानना है क रिजेज़ के शीर्ष पर लगाकर लकीरें अतिरिक्त पानी बाहर निकाल जाएगा जिससे भारी बारिश फसल को प्रभा वत नहीं करेगा क्यों क रिजेज़ और फ़रोज के निर्माण से अतिरिक्त जल खेतों से बाहर निकाल जाएगा। यदि भारी बारिश के मौसम का पूर्वानुमान कर रहे हैं तो फसल उत्पादन लागत घाटे को कम करने की लए उर्वरक छिदकव स्थ गत कया जा सकता है।

फसल जल जमाव के कारण पौधा पीला हो जाता है तो 0.5-1.0% डीएपी या 19:19:19 (नाइट्रोजन के घुलनशील यो गक) का पत्तों पर साप्ताहिक अंतराल में छिड़काव (फो लयर स्प्रे) करने से पौधों जल जमाव के प्रभाव से उबरने में मदद मलेगी।

साप्ताहिक मौसम सलाहकार रिपोर्ट समन्वय टीम:	
वैज्ञानिक	पता
डॉ. के.आर.क्रांति	निदेशक, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)
डॉ.ए.एच.प्रकाश	प्रधान वैज्ञानिक,एवं प्रधान सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र,कोयंबटूर (त मलनाडु)
डॉ. डी.मोंगा	प्रधान सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र, सरसा (हरियाणा)
डॉ एस.बी. संह	प्रधान, फसल सुधार वभाग, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)
डॉ. संध्या क्रांति	प्रधान, फसल संरक्षण वभाग, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)
डॉ. ब्लेज़ डीसूजा	प्रधान, फसल उत्पादन वभाग, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)
डॉ. इसाबेला अग्रवाल	वरिष्ठ वैज्ञानिक, सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र,कोयंबटूर (त मलनाडु)
श्री एम.सबेस	वैज्ञानिक, सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र,कोयंबटूर (त मलनाडु)

वैज्ञानिक	पता	मोबाइल नं.	ईमेल
डॉ. परमजीत संह	पंजाब कृ ष वश्व वद्यालय,(पंजाब)	**9463628801**	rsmeenars@gmail.com
डॉ. पंकज राठोर	पंजाब कृ ष वश्व वद्यालय, (पंजाब)	**9464051995**	pankaj@pau.edu
डॉ. जगदीश बेनीवाल	सीसीएस-हरियाणा कृ ष वश्व वद्यालय, हिसार-125004 (हरियाणा)	**9416325420**	cotton@hau.ernet.in
डॉ. एस. एल.आहूजा	सीसीएस-हरियाणा कृ ष वश्व वद्यालय, सरसा-125004 (हरियाणा)	**9255947380**	slahuja2002@yahoo.com

डॉ. के. एन. भाटिया	स्वामी केशवानन्द राजस्थान,कृ ष वश्व वद्यालय, गंगानगर (राजस्थान)	**9352700411**	bsmeena1969@rediffmail.com
डॉ. हरफूल मीणा	महारणा प्रताप, कृ ष एवं तकनीकी वश्व वद्यालय, उदयपुर (राजस्थान)	**9460246043**	hpagron@rediffmail.com
डॉ. एस. एल.आहूजा	सीसीएस-हरियाणा कृ ष वश्व वद्यालय, सरसा-124004 (हरियाणा)	**9255947380**	slahuja2002@yahoo.com
डॉ. नरेंद्र कुमार	सीएसए- कृ ष एवं तकनीकी वश्व वद्यालय, कानपुर (उ. प्र.)	**9335699132**	jagdishk64@yahoo.com
डॉ. गोफाल्डू	नवासारी कृ ष वश्व वद्यालय, नवासारी-396450 (गुजरात)	**9662532645**	girishfaldu@rediffmail.com
डॉ. एम.डी. खानपारा	जूनागढ़ कृ ष वश्व वद्यालय, जूनागढ़ -362001 (गुजरात)	**9426990070**	cotton@jau.in
डॉ. आर.डब्ल्. भरूद	महात्मा फुले कृ ष वद्याहपीठ, रीठरी-413722 (महाराष्ट्र)	**9850244087**	cotton_mpkv@rediffmail.com
डॉ. आर.आर. पाटिल	पंजाब राव देशमुख कृ ष वद्याहपीठ, अकोला-440104 (महाराष्ट्र)	**9657725801**	srscottonpdkv1@yahoo.co.in
डॉ.पी.आर.झाँवर	मराठवाड़ा कृ ष वश्व वद्यालय, प्रभनी-431402 (महाराष्ट्र)	**7588151244**	crsned@indiatimes.com
डॉ. सतीश परसाई	आर.वी.एस. कृ ष वश्व वद्यालय, ग्वा लयर-472002 (म.प्र.)	**9406677601**	aiccipkhandwa@gmail.com
डॉ. बी.एस. नायक	उड़ीसा-कृ ष एवं तकनीकी वश्व वद्यालय,भुवनेश्वर-751003 (उड़ीसा)	**9437321675**	bsnayak2007@rediffmail.com
डॉ. एस. भारती	आचार्य एन जी रंगा कृ ष वश्व वद्यालय, एलएएम गुंटूर (आंध्रप्रदेश)	**949072341**	bharathi_says@yahoo.com
डॉ. शर्मा	आचार्य एन जी रंगा कृ ष वश्व वद्यालय, नांदयाल (आंध्रप्रदेश)	**08514-242296**	sharmarars@gmail.com
डॉ. अलादिक ी	धारवाड़ कृ ष वश्व वद्यालय, धारवाड़ (कर्नाटक)	**9448861040**	yraladakatti@rediffmail.com
डॉ. भीमना	रायचूर कृ ष वश्व वद्यालय, रायचूर-584102 (कर्नाटक)	**9448633232**	bheemuent@rediffmail.com

नोट: यदि अधो ल खत जानकारी (जैसे: कीटनाशक, रसायन, क्षेत्र या कस मात्रा या संख्या) में दु वधा हो तो संका समाधान के लए अंग्रेजी अंक से संका समाधान करें।

हिन्दी संसकरण: रजनीकान्त चतुर्वेदी, वरिष्ठ तकनीकी अ धकारी
केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, पांजरी, वर्धा रोड, नागपुर-441108 (महाराष्ट्र)
दूरभाष-0**7103,275549**, ईमेल: **cicrnagpur@gmail.com**वेबसाइट: **www.cicr.org.in**

-- इति --